जगन्नाथ पुरी-ओडिशा। शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रतिमा।

फरीदाबाद सेक्टर 11। प्रो. एस.के. शर्मा,रजिस्ट्रार, वाय.एम.सी.ए. यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मुन्नी।

कटक-ओडिशा। रक्षाबंधन के अवसर पर महिमानंद मिश्र,एम.डी., ओ.एस.एल. को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. देबस्मिता।

केन्द्रापाड़ा-ओडिशा। कलेक्टर देबराज सेनापति को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. स्नेहा।

रसड़ा-उ.प्र.। विधायक उमाशंकर सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. जागृति।

आनंदपुर साहिब-पंजाब। सिटी पुलिस थाने के इंचार्ज गुरमुख सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रीमा। साथ हैं ब्र.कु. जागृति।

कैसे करती कार्य ... टेलीपैथी... ?

माना जाता है कि टेलीपैथी का इस्तेमाल सबसे पहले 1882 में फैड्रिक डब्ल्यू.एच. मायर्स ने किया था।

टेलीपैथी क्या है?

टेलीपैथी एक ऐसी शक्ति है जिससे दूर बैठे किसी भी व्यक्ति की मानसिक स्थिति से सम्पर्क किया जा सकता है। प्रचीन काल में सिद्धि स्वरूप लोग एक-दूसरे से वर्तालाप किया करते थे। टेलीपैथी को हिन्दी में दूरानुभूति कहते हैं। टेली शब्द से ही टेलीफोन, टेलीविज़न आदि शब्द बने हैं, ये सभी दूर के संदेश, चित्र को पकड़ने वाले यंत्र हैं। आदमी के मस्तिष्क में भी इस तरह की क्षमता होती है। बस उस क्षमता को पहचानकर उसका उपयोग करने की बात है।

कोई व्यक्ति जब किसी के मन की बात को जान ले या दूर घट रही घटना को पकड़ कर उसका वर्णन कर दे तो उसे पारेंन्द्रिय ज्ञान से सम्पन्न व्यक्ति कहा जाता है। महाभारत काल में संजय के पास यह क्षमता थी, उन्होंने दूर चल रहे युद्ध का वर्णन धृतराष्ट्र को सुनाया था। भविष्य का आभास कर लेना भी टेलीपैथी विद्या के अन्तर्गत ही आता है।

इस विद्या में हमारी पाँच ज्ञानेन्द्रियों का इस्तेमाल नहीं होता, यानि इसमें देखने, सूंघने, छूने और चखने की शक्ति का इस्तेमाल नहीं किया जाता। यह हमारे मन और मस्तिष्क की शक्ति होती है, और यह ध्यान और योग के अभ्यास से हासिल की जा सकती है। कहते हैं कि जिस व्यक्ति में यह छठी ज्ञानेन्द्रिय होती है वह जान लेता है कि दूसरों के मन में क्या विचार चल रहे हैं।

टेलीपैथी एक बहुत ही शक्तिशाली पावर की तरह कार्य करती है क्योंकि इसको यूज़ करने के लिए हमें किसी साधन की आवश्यकता नहीं होती है। यह अभी के बुद्धिजीवी मनुष्य की एक खोज है, परन्तु वास्तव में यह तो इस दुनिया में हज़ारों सालों से विद्यमान है, अपितु समय की गिरावट और आगे बढ़ने की के कारण भौतिकता की होड़ में इन सबको भूलते गये।

उसी आध्यात्मिक ज्ञान के अनुसार टेलीपैथी वह प्रक्रिया है जिसमें हम अपने संकल्पों की शक्ति को इतना पावरफुल बना देते हैं कि हमारे मन-बुद्धि के वायब्रेशन्स इतने शक्तिशाली हो जाते कि हमने किसी से बात करने का या कुछ संदेश देने का सोचा और अपनी एकाग्रता कि अवस्था में स्थित होकर आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर उस आत्मा के प्रति संकल्प किया तो हमारे से पॉवरफुल वायब्रेशन्स उस आत्मा को टच करेंगे, उस आत्मा को ये अनुभव होगा कि मुझे किसी के वायब्रेशन्स आ रहे हैं, और वह भी एकाग्र होकर उसको कैच करेगा। इस प्रकार ऐसे भी हम टेलीपैथी का यूज़ करते हैं।

जिस प्रकार इसकी विधि बुद्धिजीवी मनुष्यों के द्वारा बताई गई, उसी प्रकार संकल्पों की शक्ति को यूज़ करने के लिए हमारी बुद्धि साफ और परमात्म प्यार में समायी हुई हो। क्योंकि हमें बाबा से ही पावर मिलती है, क्योंकि वह है ही सर्वशक्तिमान विश्व पावर हाउस।

इस प्रक्रिया के द्वारा हम किसी को मानसिक रूप से ठीक कर सकते हैं या इस टेलीपैथी का उपयोग होता है जैसे...

- Thought reading..
- Case studies..
- Parapsychology..
- Scientific receptions
- Psychiatrist Deeefo...

कभी-कभी ऐसा होता है ना कि हम किसी के बारे में कुछ सोच रहे हैं, तो सामने वाले के मन में भी विचार चलते हैं और जब हम फोन से बात करते हैं तो एक-दूसरे के विचारों की सच्चाई से भी अवगत हो जाते हैं। कई बार तो सामने वाले का फोन तक आ जाता है; तो वहीं हम भी सामने वाली आत्मा को फोन करते हैं, तो वह यही कहती है कि हम आपको ही याद कर रहे थे। जैसे हम फोन से बात करते हैं और टीवी में देखते है, वैसे ही हम मन से सामने वाली आत्मा से बात (बिना तार के) करते हैं और बुद्धि द्वारा उसे देखते हैं, और सामने वाली आत्मा भी ऐसा ही अनुभव करती है। तो इसको ही विज्ञान की भाषा में 'टेलीपैथी' कहते हैं।

प्राचीनकाल के ऋषि-मुनि भी दूसरों की मन की बातों को जान लेते थे और उसके आदि-मध्य-अन्त को जान लेते थे। जिसे दुनिया में दिव्य दृष्टि, त्रिकालदर्शी, रिद्धि-सिद्धि (चमत्कार) के नाम से जाना जाता था और आज उसे ही विज्ञान में टेलीपैथी के नाम से जानते हैं।

पाँच ज्ञानेन्द्रियों के अलावा जब हमारी छठी इन्द्रिय जागृत हो जाती है तो हमें कई वर्तमान और भविष्य की घटनाओं का ज्ञान होने लगता है, इस इन्द्रिय को विज्ञान ने अतीन्द्रिय ज्ञान (एक्स्ट्रा सेंसरी पर्सेप्शन) का नाम दिया है। अब इस शब्द की महत्ता को केवल अध्यात्म ही नहीं बल्कि विज्ञान ने भी मान लिया है।

वैज्ञानिकों का मानना है कि टेलीपैथी के सिद्धांत पर ऐसी टेक्नोलॉजी विकसित हो जायेगी जो हमारे लिये सम्पर्क का एक साधन बन जायेगी। इंग्लैण्ड के रैडिंग विश्वविद्यालय् के केपिल वॉरिक का शोध इसी विषय पर चल रहा है कि किस तरह एक व्यवहारिक उपकरण तैयार किया जाये जो मानव के स्नायु तंत्र को कम्प्यूटरों से जोड़े।

टेलीपैथी का तात्पर्य होता है- टेली-पैथी। टेली का मतलब होता है डिस्टेंस या दूरी और पैथी का मतलब होता है फीलिंग, परसेप्शन अर्थात् ट्रांसमिशन, एक स्थान से कहीं भी सूचनाओं का स्थानांतरण अर्थात मनुष्य का एक दूसरे से कॉन्टेक्ट बनाना।

कैसे कार्य करती है टेलीपैथी

अमेरिका व अन्य देश के मनोवैज्ञानिकों ने मस्तिष्क में उठ रही तंरगों पर काफी शोध किया है, फलस्वरूप वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि अवचेतन मन को यदि क्रियाशील बनाया जाये तो बिना किसी आधुनिक उपकरणों, बिना किसी संचार माध्यमों के मन की तरंगों को पढ़ कर कार्य करने को बाध्य कर सकता है।

इसी आधार पर मनोवैज्ञानिकों ने अतीन्द्रिय शक्तियों पर परीक्षण कर पता लगाया है कि मनुष्य के मन मस्तिष्क में विचार उत्पन्न होते ही सारे मंडल में अल्फा तरंगों के रूप में फैलती जाती है जिसे कोई भी व्यक्ति अपने अंतर्मन को जागृत कर उन अल्फा तरंगों को पकड़ कर किसी व्यक्ति के मन में उठ रहे विचारों को पढ़ सकता है। दूर घट रही घटना को स्पष्ट देख सकता है। भूत, भविष्य व वर्तमान की जानकारियाँ दे सकता है।

टेलीपैथी की साधना

मानव मस्तिष्क में छिपी हुई रहस्यमयी शक्तियों पर शोध कर पता लगाया गया है कि मनुष्य के अवचेतन मन में अलौकिक अविश्वसनीय और अकल्पनीय शक्तियाँ विद्यमान् हैं। यदि अवचेतन मन की शक्तियों को योग आदि क्रियाओं द्वारा जागृत कर लिया जाये तो अनेकानेक चमत्कार खुद-ब-खुद होने लगते हैं। वह स्वत: ही किसी के मन तक पहुँच जाता है चाहे वह पास हो या दूर, ऐसी चमत्कारी घटनाओं को अतीन्द्रिय शक्ति का चमत्कार कहा जाता है।

इस शक्ति का उपयोग करने के लिए आत्मिक बल या कहें गुण, शक्तियों की आवश्यकता है, पवित्रता की शक्ति प्रमुख है, पवित्रता माना मन्सा, वाचा, कर्मणा विकार व व्यर्थ मुक्त स्थिति। इसमें ब्रह्मचर्य व खान-पान की शुद्धि भी अनिवार्य होती है, जितना-जितना हम पवित्रता बढ़ाते जाते हैं, टेलीपैथी उतना ही प्रखर व स्पष्ट कार्य करती है। जैसे कि हम जानते हैं कि कोई भी एनर्जी में 3 पावर्स होती हैं:-

- Magnetic power
- Radiation power
- Vibration power

पवित्रता इन 3 पॉवर्स को बढ़ाती है। क्योंकि जब हम कोई संकल्प करते हैं तो ये तीनों एनर्जी एक साथ ट्रैवल करती हैं।

शिवबाबा द्वारा सिखाया जा रहा राजयोग टेलीपैथी ही है या ऐसा कह सकते हैं कि टेलीपैथी पर आधारित है। ●